RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 3 & 4, Vol. : 5,
July-December (2018), Joint Edition, Pages : 38 - 41
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

महात्मा गांधी एवं सर्वोदय दर्शन

संतोष कुमार सिंह

असि0 प्रो0, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, खानपुर, हरिद्वार

Received : 01/11/2018 *1st BPR* : 05/11/2018 *2nd BPR* : 19/11/2018 *Accepted* : 01/12/2018

ABSTRACT

सर्वोदय को, समकालीन परिदृश्य में बदलाव परिवर्तन, विकास और गतिशीलता को मूल्यों की अवधारणा के साथ जोड़ कर देखा जा रहा है। गांधी जी के अलावा सर्वोदय सम्बन्धी अवधारणा विनोबा भावे, आचार्य शंकर देव, धीरेन्द्र मजूमदार और जय प्रकाश नारायण ने परिष्कृत किया। ये सभी गांधी जी के साथ उनके रचनात्मक कार्य में संलग्न थे। गांधी जी के अनुसार जीवन के सभी पक्षों में मूलभूत परिवर्तन ही मानव का वास्तविक विकास कर सकता है, और मनुष्य को वास्तविक मानव बना सकता है। वर्तमान विश्व जिस सच्चे लोकतंत्र की तलाश में है, वह सर्वोदय समाज में ही संभव हो सकता है क्योंकि इसमें सिरों की गणना की बजाए सर्वसम्मति से निर्णय लिए जाऐंगे और प्रत्येक व्यक्ति के मत का महत्व होगा जिससे प्रत्येक व्यक्ति उसकी वास्तविक स्वतंत्रता का उपभोग कर सकेगा।

सर्वोदय विचार काल्पनिक नहीं है, यह समाज की पुनः रचना का एक व्यापक कार्यक्रम है। यह आवश्यक है कि समाज का एक ही रूप चले या एक ही प्रकार की व्यवस्था अपनाएं। समय, स्थान और परिस्थितियों के अनुरूप बदलाव मानव स्वभाव का ही एक अपरिहार्य गुण हैं जो जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने में सहायक है बदलाव का प्राथमिक गुण है। समकालीन परिदृश्य में बदलाव परिवर्तन, विकास और गतिशीलता को मूल्यों की अवधारणा के साथ जोड़ कर देखा जा रहा है। किसी एक क्षेत्र में क्रमिक विकास का जीवन बहुमुंखी है। अतः उसके जीवन में जब तक बहुमुंखी सुधार नहीं होते है तब तक उसका विकास अधूरा है। गांधी जी मानव की दशा सुधारने के लिए सदा चिंतित रहते थे। उनके सम्पूर्ण विचार मानव केन्द्रित है। वे मनुष्य और मानव समुदाय को इकाई मानते हुए सम्पूर्ण व्यवस्था में आमूल परिवर्तन के पक्ष में थे। गांधी जी के अनुसार जीवन के सभी पक्षों में मूलभूत परिवर्तन ही मानव का वास्तविक विकास कर सकता है, और मनुष्य को वास्तविक मानव बना सकता है। इस संदर्भ में गांधी जी ने सर्वोदय दर्शन दिया, जिससे समानता, न्याय और भ्रातृत्व के आदर्शों को अत्यधिक बल मिला। सिंह के शब्दों में, ''गांधी जी की सर्वोदय सम्बन्धी अवधारणा उनके विचार दर्शन का सार है। उनका प्रमुख विचार केन्द्र सम्पूर्ण समाज का उदय और विकास है जिसकी परिकल्पना उन्होंने अपने सर्वोदय सम्बन्धी विचारों में अभिव्यक्त की है। गांधी जी का मानना है सर्वोदय एक जीवन दर्शन, एक जीवन पद्धति और नए समाज की रचना की दिशा में किया जाना वाला स्तुत्य प्रयास है।'' चूंकि गांधी जी साध्य एवं साधना की एकता में विकास करते है, इसीलिए उनके लिए सर्वोदय एक साधन है और साथ ही साध्य भी गांधी जी के अनुसार, ''सर्वोदय प्रत्येक मानव एवं समाज का परम लक्ष्य है। अतः उस तक पहुंचना सब का परम कर्तव्य है। सर्वोदय के मार्ग में पहाड़ भी आ सकते है, वेगवती नदियां भी रास्ते में बाधा स्वरूप आ सकती है और बड़े–बड़े खड्डे खाइयां आदि भी आ सकती है किंतु इन बाधाओं के होते हुए भी हमें अपने परम लक्ष्य की जाने से कोई रोक नहीं सकता। इसी इच्छा शक्ति के आधार पर हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते है।''

गांधी जी ने मूलतः सर्वोदय शब्द की रचना नहीं की। उनसे भी पहले सर्वोदय के विचार धार्मिक पुस्तकों–वेद, उपनिषद, रामायण, गीता, कुरान और अन्य में पाए जाते है। भारतीय और पश्चिमी विचार को द्वारा भी इसका आदेश दिया गया लेकिन गांधी जी ने इस युगों पुराने सिद्धान्तों और आदर्शों का विस्तृत अर्थ और प्रयोग किया। गांधी जी के अलावा सर्वोदय सम्बन्धी अवधारणा विनोबा भावे, आचार्य शंकर देव, धीरेन्द्र मजूमदार और जय प्रकाश नारायण ने परिष्कृत किया। ये सभी गांधी जी के साथ उनके रचनात्मक कार्य में संलग्न थे।

गांधी जी के सर्वोदय सम्बन्धी विचार रस्किन के विचारों से प्रभावित थे। जोन्हासबर्ग से डरबन रेल यात्रा के समय गांधी जी के मित्र पोलक ने उन्हें रस्किन की पुस्तक, ''अन टू द लास्ट'' पढ़ने की दी। इस पुस्तक ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। पुस्तक पढ़ने के पश्चात् उन्होंने निश्चय किया कि वे अपने जीवन को इस पुस्तक के आदर्शों के अनुरूप डालने का प्रयास करेंगे। उन्होंने इस

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 38-41, ISSN 2348 – 3318
संतोष कुमार सिंह
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

पुस्तक को गुजराती भाशा में अनुवाद कराया और उसका नाम 'सर्वोदय' रखा।

सर्वोदय : एक अवधारणा –

सर्वोदय की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है जो 'सर्व' यानि सभी 'उदय' यानि उत्थान से मिलकर बना है। इस प्रकार सर्वोदय का अर्थ सभी का जनकल्याण है। इस अवधारणा के माध्यम से गांधी जी सभी व्यक्तियों का बिना भेदभाव के कल्याण चाहते है। गांधी जी के शब्दों में, ''कोई भी काम ऊंचा या नीचा नहीं है। यदि व्यक्तियों का भला होता है तो सम्पूर्ण समाज का भला होगा। सर्वोदय लोकतंत्र का पक्षधर और समानता का समर्थक है। अर्थात् –

- ❖ व्यक्ति की भलाई में ही सबकी भलाई है।
- ❖ एक व्यक्ति (वकील) का कार्य उतना ही मूल्यवान है जितना कि नाई का, क्योंकि सभी को अपने कार्य से जीविकापार्जन का समान अधिकार है।
- ❖ श्रम का जीवन करने वाले किसान और हस्तशिल्पी का जीवन ही जीवन योग्य है।

गांधी जी का मानना था कि सबका अधिकतम सुख उपयोगितावादी से भिन्न है। अहिंसा का पुजारी इस उपयोगितावादी सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करेगा कि अधिकतम संख्या का सुख ही महानतम सुख है। सर्वोदयी त्याग और तपस्या के लिए सदैव तैयार रहेगा जबकि उपयोगितावादी कभी त्याग और स्व–प्रेरित नहीं होगा। उपयोगितावाद को आधार मानकर ही वह किसी भी कार्य को उचित ठहराने का प्रयास करेगा। इस प्रकार सर्वोदयी और उपयोगितावाद में अंतर है।

गांधी जी और विनोबा ने एक नैतिक आदर्श के रूप में 'सर्वोदय' स्वीकार किया है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सुखवाद सुख की प्राप्ति और आत्मपूर्णतावाद आत्मलाभ को नैतिकता का मापदण्ड मानते है। सर्वोदय शब्द का शाब्दिक अर्थ है सबका भला। सर्वोदय के नैतिक आदर्श प्रचलित समाज की भौतिक मान्यताओं से सर्वथा भिन्न है। यही कारण है कि आज हमारे जीवन में, प्रेम, सहयोग, सद्भाव, सत्य, अहिंसा के सभी नैतिक मापदण्ड लुप्त होते जा रहे हैं। यह मानव जाति का सौभाग्य नहीं वरन् दुर्भाग्य के चिन्ह हैं। गांधी जी के अनुसार नैतिकता हमारे जीवन का आधार है। व्यक्ति और समाज का अस्तित्व एवं उसकी प्रगति नैतिकता पर ही निर्भर है।

सर्वोदय की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए गांधी जी ने कहा था, ''यदि हम चाहते है कि हमारा सर्वोदय अर्थात् सच्चे अर्थों में लोकतंत्र का सपना साबित हो तो हम छोटे से छोटे भारतवासी को भारत का उतना ही शासक समझेंगे जितना देश के बड़े से बड़े आदमी को, इसके लिए शर्त यह है कि शुद्ध हो या न हुए तो शुद्ध हो जाएं और शुरूता के साथ बुद्धिमानी भी होना चाहिए।

सर्वोदय के मूल सिद्धान्त

गांधी जी के शब्दों में ''मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मेरे अंदर गहराई में छिपी पड़ी थी, रस्किन के ग्रंथ रत्न में मैंने उसका स्पश्ट प्रतिबिम्ब देखा और इस कारण उसने मुझ पर अपना साम्राज्य जगाया और मुझसे उसमें दिए गए विचारों पर अमल करवाया।'' इन विचारों के आधार पर गांधी जी ने सर्वोदय के निम्न तीन सिद्धान्तों को बताया –

1. सबकी भलाई में ही हमारी भलाई निहित है। चूंकि मनुष्य समाज का स्वाभाविक सदस्य होता है। अतः जब वह सबसे कल्याण की बात सोचेगा तो उसका कल्याण स्वतः ही हो जाएगा। उसका समाज से हटकर या अलग रहकर कोई कल्याण नहीं हो सकता। अतः सबकी भलाई में स्वयं की भलाई निहित है।
2. बुद्धि और श्रम के कार्यों की कीमत समान होनी चाहिए। यह एक अत्यन्त क्रांतिकारी और विवादाग्रस्त सिद्धान्त था। इसके अन्तर्गत गांधी जी मानते थे कि इस आधार पर कार्यों में भेद नहीं किया जाना चाहिए कि कोई कार्य बौद्धिक है या शरीर श्रम द्वारा किया गया है। वस्तुतः सभी कार्य समान महत्व रखते है। उनका मानना है कि वकील और नाई दोनों के काम की कीमत एक सी होनी चाहिए क्योंकि आजीविका का अधिकार सबको एक समान है। अर्थात् समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान आदर मिलना चाहिए। शरीर श्रम और बौद्धिक श्रम जो समाज के लिए हो उसे समान भाव से देखा जाना चाहिए।
3. श्रमजीवी का जीवन ही सच्चा जीवन है। गांधी जी ने माना कि सादा मेहनत–मजदूरी करने वाले और किसान का जीवन की सच्चा जीवन है। सर्वोदय तभी संभव हो सकता है जबकि प्रत्येक व्यक्ति आत्मसंयम अपनाए और श्रम की नैतिकता का आत्म ज्ञान करें। इसको इन्होंने दक्षिण अफ्रिका में रहते हुए व्यवहारिक तौर पर क्रियान्वित की थी। यहां प्रत्येक सदस्य किसान था। ज्यादातर कार्य व्यक्ति श्रम द्वारा सम्पन्न किए जाते थे। इनमें सभी जाति और धर्म के व्यक्ति थे। अतः यह एक सच्चा सर्वोदय आश्रम था, जहाँ सबके उदय का प्रयास किया गया।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 38-41, ISSN 2348 – 3318
संतोष कुमार सिंह
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

इस सिद्धान्त के बारे में गांधी जी ने लिखा है, ''पहली चीज मैं जानता था दूसरों को मैं धुंधले रूप में देखता था। तीसरे का मैंने विचार नहीं किया था। सर्वोदय ने मुझे दीये की तरह दिखा दिया कि पहली चीज में दूसरी दोनों चीजें समायी हुई है।''

सर्वोदय की सामाजिक व्यवस्था

गांधी जी बहु–आयामी व्यक्तित्व के पास समस्याओं के स्पष्ट विचार और निश्चित दृष्टिकोण था, जो उनके समय में सामना किया। भारतीय समाज अनेक बुराइयों से पूर्ण था। दरिद्रता ने भारत की सामाजिक स्थिति को बर्बाद कर दिया था जिसने जाति संघर्ष, बाल–विवाह छुआछूत, सती प्रथा, स्त्रियों को शिक्षा की मनाही, दहेज, बहुविवाह, भ्रष्टाचार, शोषण आदि क्षति पहुंचाई। गांधी जी ने इन समस्याओं के शीर्ष हल का प्रयास किया। सर्वोदय समाज में शोषण, भेदभाव, असामनता और हिंसा का कोई स्थान नहीं है।

गांधी जी का आदर्श (सर्वोदय) समाज निम्नांकित विशेषताओं द्वारा चिन्हित किया गया है –

- इसमें कोई दमनात्मक राज्य शक्ति नहीं होनी चाहिए और नागरिकों की सामाजिक बाध्यता जैसे प्राचीन भारत की वर्णाश्रम व्यवस्था से संगत होना चाहिए।
- इसमें ग्रामीण कृषि व्यवस्था शामिल होना चाहिए जिसमें इच्छाएं कम और सहयोग, संकीर्णता आदि सामाजिक नागरिक और आर्थिक क्रियाओं की शासन पद्धति हो।
- विकेन्द्रीकरण और हस्तशिल्प उत्पादन आधारित शासित सिद्धान्तों के अतिरिक्त तीन आर्थिक नियमों का पालन या अभ्यास करना चाहिए। ग्रामीण आत्म निर्भरता, जीवकोपार्जन– स्वयं के शारीरिक श्रम द्वारा जीवकोपार्जन (न्यूनतम उपयोग की वस्तुओं का प्रयोग या संग्रह)। भारी मशीनों या भारी वाहनों का इस समाज में कोई स्थान नहीं है।
- इस प्रकार के समाज में विवाद या संघर्ष का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। यदि विवाद हो भी जाएं तो ग्राम पंचायतों को आयोजित करने चाहिए। पंचायतों के असफलन होने पर सत्यग्रह का साधन है।

सर्वोदय की राजनीतिक व्यवस्था

सर्वोदय राज्य विहीन समाज है अर्थात यह एक विनम्र अराजकतावाद है। इसमें राज्य की शक्ति को कम करने राज्य के क्रियाकलापों को न्यूनतम करना है। इसमें सेना और पुलिस को न्यूनतम कार्य करने के लिए कहा जाता है और जीवन की गतिविधियों में कानून का हस्तक्षेप कम से कम होता है। एक व्यक्ति के पास कार्य की सर्वोच्च स्वतंत्रता है।

सर्वोदय की राजनीतिक व्यवस्था कुछ मान्यताओं पर आधारित हैं –

- सभी व्यक्ति समान रूप से जन्म लेते है।
- जनता राज्य की सभी सर्वोदय शक्तियों की स्वामिनी है।
- राजनीतिक शक्ति व्यक्तिगत और ग्रामीण स्तर पर विकेन्द्रित होनी चाहिए।
- सभी को स्व–शासन का प्रशिक्षण मिलना चाहिए।

सर्वोदय की आर्थिक व्यवस्था

गांधी जी ने जीवन के प्रति एकीकृत दृष्टिकोण अपनाया। उनका मूल उद्देश्य अर्थशास्त्र को कम करना और धर्म तथा अध्यात्मिकता को बढ़ाना था। उनके लिए नीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र दो अलग अस्तित्व वाले नहीं है। सच्चा अर्थशास्त्र गांधी जी के अनुसार सामाजिक न्याय के लिए होता है, यह सबसे कमजोर सहित सभी की समान रूप से भलाई करता है। गांधी जी की सर्वोदय की आर्थिक व्यवस्था साधारण, विकेन्द्रीकरण, स्व–निर्भरता, सहयोग, समानता, अहिंसा, श्रम की महत्ता, मानवीय मूल्य, स्व–निर्भर ग्राम इकाइयाँ, मूलभूत उद्योगों राश्ट्रीयकरण, स्वदेशी और ट्रस्टीशिप के सिद्धान्तों पर आधारित है। बदले में, यह सभी श्रम, उत्पादन, वितरण और लाभ आदि के अतिरिक्त सभी समस्याओं का समाधान करेंगे।

निष्कर्ष

वर्तमान विश्व जिस सच्चे लोकतंत्र की तलाश में है, वह सर्वोदय समाज में ही संभव हो सकता है क्योंकि इसमें सिरों की गणना की बजाए सर्वसम्मति से निर्णय लिए जाऐंगे और प्रत्येक व्यक्ति के मत का महत्व होगा जिससे प्रत्येक व्यक्ति उसकी वास्तविक स्वतंत्रता का उपभोग कर सकेगा। विकेन्द्रीकरण और ग्राम स्वराज इसकी प्रमुख देन कही जा सकती है जोकि प्रत्येक व्यक्ति में पंचायती राजव्यवस्था द्वारा क्रियान्वित करने की कोशिश की जा रही है। वस्तुतः सर्वोदय का उद्देश्य सत्य और अहिंसा के आधार पर एक ऐसे समाज की रचना करना है जिसमें सभी समान होंगे उनमें किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होगा। सभी के साथ न्याय

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 38-41, ISSN 2348 – 3318
संतोष कुमार सिंह
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

और समाता का व्यवहार होगा। जिसमें व्यक्ति और संस्थाओं के विकास के लिए पूरा–पूरा अवसर होगा। वर्तमान शताब्दी में सर्वोदय का महान योगदान गांधीवादी नैतिक दृष्टिकोण के पुनर्कथन, समाज एवं राज्य के जनकल्याण के लिए दृष्टिकोण निर्माण में संरक्षित हैं।

सन्दर्भ सूची –

1. सिंह, राम जी, ''गांधी दर्शन मीमांसा'', बिहार , हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1973
2. गांधी, महात्मा, ''आत्मकथा'', नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1987
3. मिश्र, अनिल दत्त, ''गांधी एक अध्ययन'', पियर्सन, नई दिल्ली, 2012
4. गांधी, ए.के., ''सर्वोदय'', नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1957
5. चंदेल, धर्मवीर, ''गांधी चिंतन के विभिन्न पक्ष'', राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2012
6. गांधी, एम.के., ''मेरे सपनों का भारत'', नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1960
7. महावर, सुनील, ''गांधी जी का सर्वोदय दर्शन : एक विचार दृश्टि'', द्वारा उद्धत विद्या जैन, ''गांधी दर्शन : सामयिक संदर्भ'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2012
8. गंगल, ए.सी., ''गांधीयन थॉट एण्ड टेक्नीक्स इन द मॉडर्न वर्ल्ड'', क्रोइटेरीयन पब्लिकेशन्स, न्यू देहली, 1988